जंगली है कौन?

फा० फ्रांसिस डेविड कुल्लू, ये० स०

"भौं, भौं!" जुबली दूर से ही अपनी ओर आते किसी कुत्ते को देखकर जोर-जोर से भौंकने लगी। भौंकती क्यों नहीं? आखिर कुत्ता अपने सीमाने का बादशाह होता है। जब कोई दूसरे कुत्ते उसकी सीमा पार करते, तो वह मात्र भौंकता नहीं, काट भगाता है। लेकिन जब कोई चिर परिचित कुत्ता हो तो दुम हिलाता, पुचकारता उसका स्वागत करता है। लेकिन वीआईपी ने एक बार भौं कह कर जैसे ही, "मैं हूँ रे जुबली" का जवाब दिया, जुबली मारे शर्म से, कुछ खुशी से अपना दुम हिलाने लगी और जमीन पे लोटने पलटने लगी। दोनों एक दूसरे को सूँघने-पुचकारने के बाद कुछ क्षण अपने दु:ख-सुख की बातें करने लगे।

"अरे ओ माई वीआईपी! कहाँ चला गया था तुम मुझे अकेली छोड़कर?" "रे पगली, जुबली! मैं तुझे अकेली छोड़कर गया ही कहाँ था? मैं जानता था कि जल्द हमारी संख्या दो दुनी चार होने वाली है। इसीलिए मैं घर से खिसक गया।" "अच्छा! तो तुम्हारी ये सोच थी। खैर! ठीक किया तुमने! इधर बच्चों के आने के बावजूद हमारे राशन-पानी में कोई बढ़ोतरी नहीं।" "अच्छा! चलो दिखाओ न हमारे लाल कितने बड़े हो गये हैं! मुझे पापा कहके पुकारेंगे की नहीं।" "हाँ! पहले बताओ न कि तुम इतने दिन कहाँ चले गये थे?" "क्यों! मेरी अनुपस्थिति खल रही थी क्या?" "तो!" "हाँ! मैं युनिवर्सिटि चला गया था। पता है मैंने एक नई डिग्री प्राप्त कर ली है। मैं अब पढ़ सकता हूँ! और लोग मुझे सीआईपी नहीं वीआईपी कहते हैं! "अरे वाह! ये तो बड़ी अच्छी बात है। मैं भी तुमको एक खुशखबरी दूँगी।" "क्या है? जल्दी बताओ न।" "यही कि हमारी संतान चार नहीं, पाँच हो गई है।" इतने में चारों पिल्ले अपनी मांद से निकल कर अपनी माँ के पास चले आये और उससे खेलने लगे। उनकी माँ बोली - "ये रहा तुम्हारा बाप! जाओ उससे भी खेलो।"

कुछ देर उनका बाप भी सूँघ-चाट कर उन्हें पुचकारा और उनके बाप होने का सुखद एहसास का अनुभव किया। "अजी, कहाँ तब, वो पाँचवी संतान?" तभी सभी पिल्ले कूँ..कूँ करते अपनी मांद की ओर दौड़ पड़े। उनके पीछे जुबली चली। सीआईपी भी चला। सब उस पाँचवी संतान को देखने लगे। "है न अजीब संतान! इसे चलने-फिरने में महीनों या क्या पता सालों लग जाऐंगे।" "अजी! यह चौपाया नहीं दो पैरों वाला बच्चा है। कहाँ मिला तुमको यह?" "यहीं बगल की झाड़ी में! जब मेरे दिन पूरे हो गये और अपने नवजातों को जन्म देने की जगह ढूँढ़ने लगी तो झाड़ी में यही रोता हुआ मिला। तब से मैं इन्हें अपनी संतान की तरह पाल-पोस रही हूँ।" "हे भगवान! मानव की ये दशा!" चिंतित, व्यथित और अश्रुपूरित सीआईपी अपनी आंसू पोछने लगा। "तुम धन्य हो प्रिय! तुमने बड़ा अच्छा किया।" और दोनों अपनी माँद से बाहर आये। बाहर आकर सीआईपी ने देखा सामने एक बोर्ड लगा है। वह उसे जोर-जोर से पढ़ने लगा -"भ्रूणहत्या दंडनीय अपराध है।" "क्या मतलब!" जुबली ने जिज्ञासा भरे स्वर से पूछा। "ये मानव पगला गये हैं जुबली! इन मानवों ने भ्रूणहत्या रोकने के लिए कानून बनाया है। कहते हैं कि ये ऐसे लोगों को कड़ी सजा देते हैं जो भ्रूण हत्या करते हैं।" "लेकिन इन्सानियत की हद तो देखो! ये मानव अपने नवजात को ऐसे ही फेंक देते हैं! हाय भगवान! ऐसे कैसे हो जाता है?" "इन्सान अब इन्सान न रहा जुबली!" "हमने अपने मालिक को इतनी सेवाएँ दीं लेकिन तंगहाली के दिन भी कोई दया-धर्म नहीं। तुमने ठीक किया था भागकर!" "मैं तो कहता हूँ हम सब इन दुष्ट मनुष्य के चंगुल से भाग चलें।" "भागना तो पड़ेगा ही प्रिय! हम कब तक मनुष्य के वफादार सेवक बने रहेंगे? बड़ा दु:ख होता है जैसे-जैसे बच्चे बड़े हो रहे हैं मालिक आता है और देखता है कि किसे कहाँ कितने में बेच दें?" "फिक्र मत करो। मैं तुम सबको दुष्ट मानवों की बेड़ियों से जरूर मुक्त करूँगा।"

कुछ दिन बाद सीआईपी जुबली और पाँचों संतानों को भगा ले जाने में सफल रहा। वह दूर किसी स्वच्छंद कुत्तों की टोलियों में जा बसा। जल्द ही वह वहाँ का बोस बन गया। कुत्ते बिल्ली, सूअर, मुर्गे-मुर्गियाँ, चूहे, खरगोश, सियार, लोमड़ी, भालू - सबकी पहुँच थी। आखिर वह पढ़ना जानता था जो। उधर जुबली को अपनी चार संतानों की उतनी चिंता नहीं थी जितनी पाँचवीं की। बाकी तो अब आत्मनिर्भर बन गये थे। जुबली अपनी पाँचवी संतान का विशेष ख्याल रखती थी। इसका विकास बहुत धीरे था। फिर भी अब वह रेंग सकता था। जानवरों की दुनिया में यह मानवपुत्र एक अजीब जानवर था। लेकिन कोई उसकी हानि नहीं करते थे। बड़े प्यार से सभी उसे पंचुलाल कहकर पुकारते थे।

जानवरों की दुनिया से बेहद करीब ही मनुष्यों की दुनिया थी। लेकिन काफी अगल दुनिया। मानव पुत्र-पुत्रियों के लिए स्कूल थे जहाँ बच्चों को न केवल शिक्षा मिलती थी बल्कि भरपेट खाने के लिए मिड डे मील भी। बच्चों को शिक्षा मिले या न मिले मिड डे मील का पाई-पाई का हिसाब रखना पड़ता था। आखिर मिड डे मील बच्चों का अधिकार बन गया था। हाँ, इसमें कुत्ते, बिल्ली, सूअर, मुर्गे-मुर्गियों का भी कुछ हक बनता था। लेकिन स्वार्थी मानव वो हक भी छीन लेना चाहता था। इधर आये दिन कुत्तों की जमघट कुछ ज्यादा हो रही थी। कौओं के काँव-काँव की गूँज से सब मानवप्राणियों के कान सुन्न हो रहे थे। स्कूल कर्मचारियों ने स्कूल प्राचार्य से इसकी शिकायत कर दी। फलस्वरूप प्राचार्य ने स्कूल अहाते में कौआ, कुत्ता, बिल्ली, सूअर -सबको देखते ही गोली मार देने का फरमान जारी कर दिया।

किसी दिन फरमान की एक प्रति मोन्टू के हाथ लग गयी। वह उसे तुरंत अपने पापा सीआईपी के पास ले गया। सीआईपी ने तुरंत एक आपातकालीन सभा बुलायी और फरमान सबों के सामने पढ़कर सुना दी। बहस होने लगी। "अच्छा! क्या, क्या इलजाम लगाया गया है हमपर?" किसी ने पूछा। "कहा गया है कि हम जंगली हैं। हम असभ्य हैं। हम गन्दे, नीच, छदम् जानवर हैं। कहा गया है कि स्कूल आहाते में अब हमारी एक नहीं चलेगी। हमें देखते ही गोली मार देने का आदेश है।" सीआईपी ने मुख्य बातों को फिर से दुहराया। "अरे! यह तो हमारे साथ सरासर अन्याय है।" "हम स्कूल अहाता जाते हैं तो इसमें हमारी क्या गलती है?" "हम वहाँ गंदा थोड़े जो करते!" "गंदा तो वे ही करते, हम तो साफ-सुथरा करने जाते हैं!" "फिर भी हमारा अपमान! ये हमें वहाँ से खदेड़ना चाहते हैं?" "अरे! ये मानव कितने सभ्य हैं उसका प्रमाण तो मैं हूँ।" पंचुलाल भी बोल उठा। और सब ठहाका लगाकर हँस पड़े। "ठीक है मित्रो!" सबकी

बात सुनने के बाद सीआईपी समझाने लगा। "कल हम ही प्राचार्य के पास अपनी बात रखेंगे। हम पूरे जुलूस के साथ स्कूल जाएँगे। हम उन्हें सिखायेंगे कि जब तक आप मानव पुत्र अपनी नीयत नहीं सुधारते और भोजन इधर-उधर बेतरतीब फेंकते फिरते, तब-तब हम वहाँ आएँगे और हम आपको आपकी नीयत दिखावेंगे।"

योजनानुरूप दूसरे दिन सबने स्कूल आहाते में धावा बोल दिया। कौंओं की मंडली ऊपर से मंडरा रही थी। कुत्तों का दल सीआइपी के नेतृत्व में आ धमका। यहाँ तक की पंचुलाल भी आ पहुँचा। लेकिन इतने सुबह-सुबह कुत्तों और कौओं का समूह देख प्राचार्य झल्ला उठा। खुद बन्दूक निकाली और अंधाधुंध फाइरिंग शुरू कर दी। "कांई-कांई" करते सब दुम दबाके भागे। लेकिन भागने के क्रम में सड़क पार करते समय अचानक पंचुलाल एक ट्रक की चपेट में आ गया। पूरा दिन ढल गया लेकिन उसकी लाश किसी ने नहीं उठायी। बल्कि उसी लाश पर एक के बाद एक गाड़ी रौंदती चली गयी।

उधर यह बुरी खबर सुन जुबली, सीआईपी और अन्य कुत्तों का दल घटनास्थल पहुँचा। यह खतरनाक दृश्य देख सब बेहद शोकित थे। "हाय! हमने अपना प्यारा जन खो दिया।" चहूँ ओर मातम् छाया था। आकाश में चील, गीद्ध और कौअे मंडरा रहे थे। लेकिन उनमें भी संवेदना थी। वे भी इतने शोकाकुल थे कि किसी के मुँह में लार तक न टपका।

घटनास्थल के करीब ही पीपल पेड़ के नीचे सब स्वत: एक शोक सभा हेतु एकत्र हो गए। सबके चेहरे पर उदासी थी साथ ही साथ मानवों के प्रति गहरा आक्रोश। कहने लगे -"ये मानव समाज, हम सबको जंगली और असभ्य मानती है। देख लिया न आपने इनकी सभ्यता? गाड़ियाँ इतनी तेज चलाने की क्या जरूरत थी?" "माना कि गलती होती है। पर इनकी संवेदना तो देखिए! लाश पर ही गाड़ियाँ दौड़ा रहे हैं।""हाँ! अगर कोई मानवप्राणी की दुर्घटना हो जाती तो...शव के साथ बैठकर घंटों सड़क जाम करते और सरकार से मुआवजा की मांग करते!" "वैसा क्या करेंगे? पंचुलाल तो मानव प्राणी था ही नहीं!" "ये पीडब्ल्यूडी वाले या प्रशासन वाले क्या करते हैं? कम से कम लाश तो उठवा लेते!"...इतनी ही नहीं, कई गंभीर सवाल खड़ा किए गए। लेकिन क्या मानव इनका जवाब देगा? अंत में जुबली, सीआईपी और उसके परिवार को सांत्वना स्वरूप चील, गीद्ध और कौओं का समूह आगे आया। बोला-"भाई, देखो! सभ्य कहलाने वाली मनुष्य जाति अपनी जिम्मेदारी ले अथवा नहीं, हम लेते हैं। आप चिंता न करें हम हमारे प्यारे पंचुलाल को ससम्मान अंतिम संस्कार देंगे। और तब क्या था? चील, गिद्ध और कौअे पाँच मिनट में पंचुलाल के शव का नोंच-नोंच कर सफाया कर बैठे। शोक-संतप्त जुबली और सीआईपी की दशा क्या रही होगी? इसका जवाब संवेदनहीन मानव दे नहीं सकता। कितने लाड़-प्यार से वे उसे पाल-पोस रहे थे। उनका इरादा था कि वे उसे अच्छे संस्कार देकर सच्चा इंसान बनायेंगे, जो लोगों की आँखे खोल देगा और लोगों को बतला देगा कि असल में जंगली हैं कौन? लेकिन उनका इरादा चकनाचूर हो गया। मानव नीयत पढ़ सकने वाले सीआईपी की डिग्री भी व्यर्थ साबित हो गई।